अंतरा-शब्दशक्ति

सुरमई उजाला

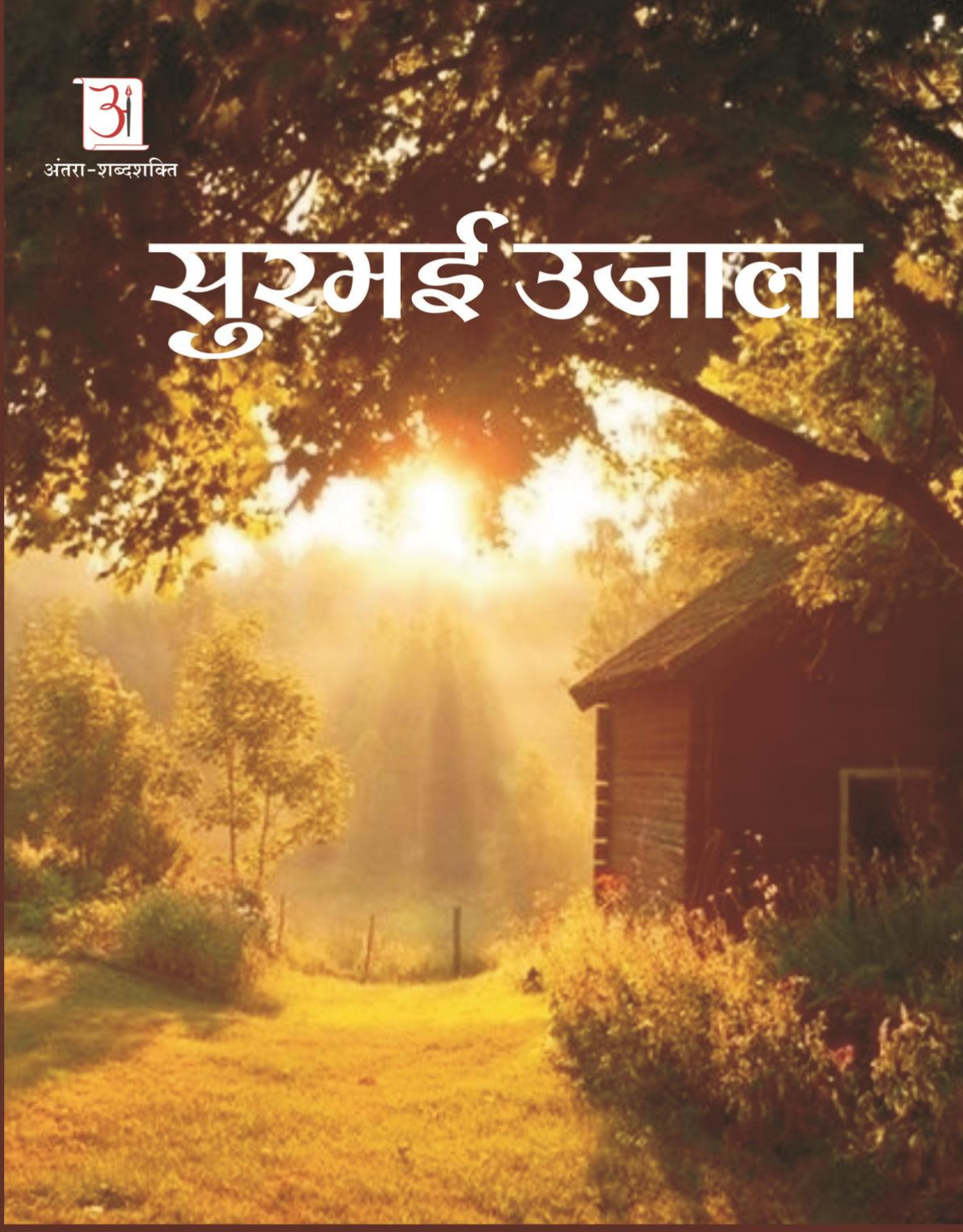

(काव्य संग्रह)

श्रीमती रेणु चन्द्रा माधुर

सुरमई उजाला

(काव्य संग्रह)

रेणु चंद्रा माथुर

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-17-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चैक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- रेणु चंद्रा माथुर
मूल्य - ५५.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Surmai Ujala by Renu Chandra Mathur

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

शुभकामनाएँ

कवि हृदय अपने आस-पास घटने वाली तमाम घटनाओं एवं गतिविधियों को सूक्ष्मता से आत्मसात करता है। तत्पश्चात अन्तर्मन पर जो प्रभाव होता है, वही उसके सृजन में अभिव्यक्ति के रूप में जन्म लेता है। यह संवेदनशील सृजन की स्वाभाविक प्रतिक्रियाऐं होतीं हैं। माँ शारदे की कृपा से भावों की कोमलता और अनुभूतियों की सघनता जब कलम की संगत में मुखर होती है, तभी कविता रची जाती है।

कवयितत्री रेणु चन्द्रा जी भी प्रस्तुत कविताओं के लिये इसी प्रक्रिया से गुजरी होंगी। इनकी रचनाऐं भिन्न-भिन्न भावों से अभीभूत हैं। अध्यात्म, त्योहार, देशभक्ति, नारी अन्तर्मन से लेकर प्रकृति के प्रति अनुराग इनकी कविताओं में झलकता है। इनकी कविताऐं सहज एवं सरल भाषा में लिखी गईं हैं। अपने को अभिव्यक्त करने में इनकी कविताऐं पूर्ण रूप से सक्षम हैं। पढ़ने पर यह कविताऐं अपनी सी लगतीं हैं। रेणु चन्द्रा जी के इन मनोभावों के लिये हार्दिक शुभकामनाएँ।

आभा सिंह

मानसरोवर, जयपुर

अनुक्रमणिका

1.	पट खोल दो	7
2.	भोर गीत	8
3.	अनकही बातें	9
4.	अन्तर्भाव	10
5.	चाहत	11
6.	नेह प्यार	12
7.	जाने क्यों?	13
8.	देवदार	14
9.	क्या यही कविता है	15
10.	सुरमई उजाला	16
11.	गुलमोहर की छाँव में	17
12.	आया होली त्योहार	18
13.	मन भीग भीग जाता है	19
14.	आषाढ़ की बदली	20
15.	नारी कहो तो,..	21

16. देशभक्त 22

17. जीने की राह 23

18. जीवन की धुरी 24

19. तुम मेरे घर आई हो 25

20. दरकता मन 26

21. अंत 27

22. अकेली चौखट 28

23. निमन्त्रण 29

24. बहती ही जा रहीं हैं 30

25. बस अब तो... 31

26. यह भी हो सकता है 32

पट खोल दो

हे प्रभु !
दर्शन करने दो
मंदिर के
पट खोल दो ,
जब होती हूँ
सामने तुम्हारे
नजरें मिलते ही
अश्रु मेरे
बह जाते हैं
दर्शन में
विघ्न डालते हैं,
भाव भरे नैनों से
मन के भीतर
तुम्हें बिठाती हूँ,
दर्शन की भीख
मुझे दे दो
खड़ी हूँ मैं
दर्शनाभिलाषी
तेरे द्वार पर
मंदिर के
पट खोल दो,
हे प्रभु !
दर्शन करने दो ।

भोर गीत

रात की काली चादर
सिमटती जा रही
उम्मीदों का उजाला
चहुँ ओर फैल रहा ।

थकन मिटी तन की
मन के बोझ हटे
नई उमंग नई तरंग
विश्वास रंग घोल रहा ।

जीवन के आँगन में
प्रेम रंग बरस रहा
बंद पडे दरवाजे
आशाओं के खोल रहा ।

कोहरा छँटने लगा
उदास ना कोई रहा
नींद से जाग कर मन
आरती के स्वर गा रहा ।

नई डगर पर चल
पथिक नई सोच जगा
डाल पर बैठा पंछी
भोर गीत गा रहा ।

अनकही बातें

कुछ बातें हैं
अनकही सी
रहतीं हैं
निरन्तर मेरे
अन्तर्मन में
जीवन पर्यन्त
विचरतीं हैं
मेरे मौन के
साथ-साथ
हवाओं में
घुलकर मेरे
चारों ओर
मंडरातीं हैं
मन में कई
प्रश्न उठातीं हैं
उन प्रश्नों के उत्तर
देने पड़े तुम्हें तो
हो जाओगे निरुत्तर
इसी वजह से
कहती नहीं कुछ
मैं चुप रहती हूँ।

अन्तर्भाव

स्याह रात की
काली चादर के तले
अक्सर ही
सपने मुझे
डराते रहे
घबरा कर
मै दिन भर
आसमां की
नीली चादर पर
रंगीन बूटे काढ़ती रही
इन्द्रधनुष ने मुस्कुरा कर
उसे सतरंगी बना दिया
सूरज की किरणों ने
ज़री की झालर
आसमां पर टाँक दी
फिर मैं रात भर
तारों जड़ी
चादर ओढ़ कर
रंगीन सपने
बुनती रही।

चाहत

पंछियों के
पंख
दिल वालों के
हौसले
लेकर हम जो
धरती से
गगन तक
नीले आसमां
को छूने की
चाहत लिए
स्वतंत्र मन से
उड़ते चले गए
फिर मुड़ कर
ना देखा हमने,
हम भूल गए
क्या क्या दर्द
दिये थे पिंजरे ने ।

नेह प्यार

नेह प्यार की
बातें करते
खुद से शर्माते
रात की तारों जड़ी
चादर ओढ़ कर
मन की चिड़िया
बादलों में जा छुपी
नेह की बूंदें बरसीं
डाली डाली लहराई
देवदार ने बाहें फैलाईं
जब फैला चहुँओर
भोर का उजाला
प्यार के बूटे खिले
सुनहरी किरणों
का साथ पाकर
पत्ता पत्ता हरियाया
मन की चिड़िया ने
नभ में उड़ने को
धीमे धीमे पर खोले
नेह प्यार की बातें करते
मीठे मीठे स्वर बोले।

जाने क्यों ?

जाने क्यों ?

वह लड़की देखो तो
तिनके चुनती है
चिड़िया बन
उड़ उड़ पेड़ों पर
अपना घर बुनती है
सपनों का
संसार सजा कर
इन्तजार करती है
बेख़बर दुनियाँ की
सेंधों से
वो हर बार
लुटा करती है।

देवदार

वृक्ष देवदार का
धीर गम्भीर प्रेमी सा
इन पहाड़ों में
उदास खड़ा है।
सुनसान वीराने में
सदियों से घनी वादियों में
ठंड से काँपता
कोहरे में लिपटा
अपनी चिलम सुलगाये
विरही गीत गुनगुनाता
नेह की बांसुरी पर
प्रेम धुन बजाता
विगत यादों में
तड़पता है।
फिर भी मौन
बरसों से
प्रियतमा के
इन्तज़ार में
बाँहे फैलाये खड़ा है
वृक्ष देवदार का।

क्या यही कविता है

छंदावलि
छंद मुक्त
रचना कृति
कला कृति
नक्काशी
सृजन से
सृजनात्मकता तक
बड़ी बड़ी बातें
आतीं नहीं मुझे ,
मुझे तो बस-
बादल गगन
पर्वत नदियाँ
हरी भरी
वसुधा पर फैला
पीला सरसों का
आँचल ही भाते हैं
लोगों के दर्द
मुझसे देखे नहीं जाते
रह रह कर
यही मेरे मन में
बस जाते हैं
क्या यही कविता है ?

सुरमई उजाला

सुबह का
सुरमई उजाला
मेरे पास आकर
कानों में मेरे
कुछ कहता है
मैं नींद से जाग उठती हूँ
उस भोर किरण को
निहारती हूँ
उसमें तैरते हुए
कई भाव लिये
उन दिव्य कणों को
छू- छू कर देखती हूँ
बिना बोले ही उनसे
ढ़ेर सी बातें करती हूँ
इन अनुभूतियों को
अभिव्यक्त करना
असंभव है
ये अहसास है
जीवन के निर्जीव पलों को
सजीव बनाते है।

गुलमोहर की छाँव में

मुझे किताब में
सूखा हुआ फूल मिला,
छूते ही सिहरन हुई
पागल हवा ने छेड़ा
यादों के सागर में
मन डूबने लगा
हर बीता हुआ पल
फिर याद आने लगा,
गुलमोहर की छाँव में
हाथों में हाथ लिये
तुम थे, मैं थी
महके हुए से पल थे
एक प्यार भरा अहसास था
जिन्दगी के दोराहे पे आकर
जो बिछुड़े तो फिर ना मिले
बस अब तो-
आँसुओं से भीगे हुए पन्ने
और ढ़ेर सी यादें हैं।

आया होली त्योहार

आया होली त्योहार
रंग बिखरे अपार
पिया को देख कर
गोरी शरमा गई
आसमाँ बहक गया
धरती हुई लाल।

ढ़प की थाप पड़ी
उड़ रहा अबीर
सब द्वेष भुला कर
चंग बजता रहा
नाच उठा तन मन
मस्त हो गई चाल।

रंगों की चाह रहती
हर पल जीवन में
मस्तक पर लगा
विश्वास की बिंदिया
गालों पर लगाओ
सद्भाव का गुलाल।

सखी फाग मैं खेलूं
कान्हा के ही संग
डालूं रंग भर कर
पिचकारी प्रेम रस की
भीगी मोरी चुनरी
भीग गये गोपाल ।

मन भीग भीग जाता है

जब सावन आता है
गीत कोई गाता है
बौछारें पड़ीं तन पर
मन भीग भीग जाता है।

सुहाना सा मंजर है
बागों में झूले पड़े है
हवाओं के पँखों पर
मन मचलता जाता है।

धूप आती जाती है
आँख मिचौली होती है
बादल की ठिठोली पर
मन बहक सा जाता है।

बूँदों की ताल पर
मयूर नृत्य करता है
कोयल जो कुहकी तो
मन झूम झूम जाता है।

आषाढ़ की बदली

आषाढ़ के एक दिन
द्वार झरोखे ना खुले
ये शहर में कैसा
सन्नाटा छा गया
धूप में तपता है
गुलमोहर का मन,
सूखे ताल-तलैया
मुरझाये सब वृक्ष हैं
एक झलक वर्षा की
देखने को तरस गये
उमस बिखरी हुई
ऊबा हुआ सा मन है
प्रतीक्षा है मन को
उन काले घने बादलों की,
प्रिये ! तुम आओ तो
यह बादल बरसें
और प्यास बुझा दें
प्यासे मन की
डरती भी हूँ कहीं वो
नाउम्मीद ना कर दें।

नारी कहो तो,..

नारी कहो तो
तुम किस मिट्टी
से बनी हो ?
कितने आँधी पानी
तूफ़ान सब
सह जाती हो,
कितनी परिक्षाओं से
गुजर जाती हो
उफ़ तक नहीं करती,
सच नारी तुम तो
गीली मिट्टी
से बनी हो
जिस साँचे में
ढ़ाली जाती हो
उसी में ढ़ल
जाती हो,
उसी के अनुरूप
हो जाती हो,
तुम विभिन्न
स्वरूपा हो ।

देशभक्त

ना जाने कहाँ चले गए
वो क्रान्तिकारी देश भक्त
देश की गीली मिट्टी पर
छोड़ गये पद चिन्ह
दे गये यह स्वतन्त्र देश
हम सभी को सौगात में ।
किया त्याग अपना जीवन
तज दिये सुख भरी जवानी में
जी सकते थे वे भी सुख से
पा सकते थे अपार सम्पत्ति
फिर भी पाया चैन उन्होंने
देश पे न्योंछावर हो जाने में ।
ऐ नौजवानों ! तुम्हें कसम है
भूल ना जाना जिनके बल पर
तुमने यह स्वतंत्रता पाई है
आओ हम सब कसम खायें
शक्ति लगा दें सारी अपनी
देश को मजबूत बनाने में ।

जीने की राह

तुम सुनो
मुझे भी
सुनने दो,
अन्तर्मन से
यह कैसी
आवाजें आतीं हैं ?
कहतीं हैं
नहीं बनना
मुझे मीरा या
महादेवी जैसा,
मुझे तो सुनना है
तुलसी और
कबीर को
गली गली
चिलगोज़ा बजता हो
और कबीरा
गाता हो,
भटके हुए को
जीने की
राह दिखाता हो।

जीवन की धुरी

आप से तुम
पास भी तुम
दूर भी तुम
अपने भी तुम
गैर भी तुम
राज़ी भी तुम
नाराज़ भी तुम
हर दिशा में
तुम ही तुम
तुम से जुड़ी
हर एक कड़ी
तुमसे अलग
कुछ भी नहीं
मेरे जीवन की
एक ही धुरी
बस हो -
तुम ही तुम ।

तुम मेरे घर आई हो

दीपावली के जगमग
दीप जला के उजियारे
झिलमिल तारों जैसी
तुम मेरे घर आई हो।

नव अनन्त नीलाभ से
घर आँगन में उतरी
मन में भरती मिठास
तुम आज मुस्कुराई हो।

जीवन के अँधियारे में
चमकती बिंदिया सी
अद्‌भुत प्रकाश फैलाती
तुम परीलोक से आई हो।

खेतों में धान काटती
घर को देती हो समृद्धि
जीवन में फसलों सी
तुम फिर लहलहाई हो।

जीवन के उपवन में
त्योहार सी सज कर
मन को ख़ुशियों से भर
दीपावली तुम आई हो।

दरकता मन

सहज होने की कठिन प्रकिया में
मन के अवसाद पिघल कर बहने लगे।

दरकते टूटते
टूट कर बिखरते
काँच के बरतनों से
मन के विश्वास
क्रूर चट्टान से टकरा कर टूटने लगे।

रिश्तों के आईने दर्द की नदिया पे
कमजोर पुल बनकर चटकने लगे।

जीवन नैया को
तकदीर के हाथों
साजिश के भँवर में
फिर डूब जाने के
बोझिल अहसास मन को डराने लगे।

अंत

मन तो चला था
बस प्यार करने
अपने पराये के
चलाये तीर तुमने ।

ज़ख्म बहुत गहरा था
फिर भी दबाया हमने
क्यों हाथ सन लिये
इस रक्त से तुमने ।

नफरत आँखों में
इस कदर बसा ली
मिल ना सके जीते जी
दूर कर दिया तुमने ।

अंत भी ऐसा कि
स्तब्ध रह गये हम
मर कर भी ना
मिलने दिया तुमने ।

अकेली चौखट

साँझ सवेरे
बाट जोहती
साँवली सलोनी।
बिन दरवाजों की
अकेली चौखट
सूनी देहरी।
बिन परकोटे का
पगला आँगन
उपेक्षित तुलसी।
उपर फैला है
नीला अम्बर
नीचे बालू रेती।
अहसास दरवाजे
भड़ भड़ाने का
बहकी पुरवाई।
ये सिर्फ अह्सास है
ना बंद दरवाजे हैं
ना उनका खुलना।
बिन दरवाजों की
अकेली चौखट।

निमन्त्रण

मैं स्वयं को ही
निमन्त्रण देती हूँ
आये और जीवन के
इन शेष पलों को
अंजुरी में भर के
उनमें खुशबू भर दे,
भुला दे उन
बिखरे हुए पलों को
जो आँसुओं से
कभी लथपथ थे
जीवन को नये स्वर दे,
आँसू पोंछ के
फिर तू
मुस्कुराने के
बहाने तलाश
जीवन को
नये आयाम दे दे।

बहती ही जा रहीं हैं

मेरी कविताएं अक्सर
मुझसे कुछ कहतीं हैं
मैं समझ नहीं पाती
शायद उनके अक्षर ही
धूमिल से हो गये हैं,
ऊपर से ये हवाएं भी
मेरी उम्मीदों के पन्ने
उड़ाए लिये जा रही है,
पहाड़ों से उतरते हुए
रात के साये में
यह चंचल नदी
मनमोहक पूनम के
चाँद का अक्स
पानी में डुबो लाई है
देखो मेरी कविताएं
उसी पर मोहित होकर
सुधबुध खोकर
बहती ही जा रहीं हैं।

बस अब तो...

पहिले हम तुम
बतियाते थे
बहुत कुछ
आंखों आंखों में
कह लेते थे
बहुत कुछ मन में
उमड़ता था
बस अब तो
मौन सा रहता है
कहने को कुछ नहीं
ना उलाहने
ना मिन्नतें
ना चाहतें
ना रूठना मनाना
हर तरफ सन्नाटे
पसरे रहते हैं
और हम-
सागर किनारे
चुपचाप बैठकर
लहरों का मचलना
देखते रहते हैं।

यह भी हो सकता है

मैं एक कथानक
तक ही संतुष्ट नहीं
मुझे त्रासदी की
कथाऐं कहनी हैं।
मैं किसी कथा का
सिर्फ पात्र नहीं
मुझे तो कथाकार की
लेखनी बनना है।
युगों-युगों से जो
कथा चल रही है
उसे बदलना है।
ज्वाला में जलती
और करुणा में डूबी
नारी के स्वरूप
को नये रूप में
पेश करना है।
मुझे दर्शकों से तालियों की
अपेक्षा नहीं वरन
वे हतप्रभ हो कह सकें कि-
यह भी हो सकता है।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- श्रीमती रेणु चन्द्रा माथुर
जन्मतिथि	- 4 मार्च 1951, अजमेर
निवास स्थान	- 140, न्यु कालोनी, एम.आई. रोड़, वालस्ट्रीट होटल के पास जयपुर (राजस्थान), 302001
फोन नं.	- 9314879360, 9460124018
मेल आई.डी.	-
विधा	-कविता, लघुकथा, कहानी, हाइकु इत्यादि
प्रकाशन	-धूप के रंग (कविता संग्रह)- राजस्थान साहित्य अकादमी। छोटी सी आशा (लघुकथा संग्रह) एवं अनेक सांझा संग्रहों में रचनाऐं प्रकाशित
सम्मान	- अखिल भारतीय साहित्य परिषद राजस्थान 2014 - कविता के लिए पुरस्कार। एवं वर्ष 2015 - लघुकथा के लिए पुरस्कृत। म.ग.स.म. द्वारा लाल बहादुर शास्त्री सम्मान। वर्ष 2015 - अखिल भारतीय डॉ.कुमुद टिक्कु लघुकथा प्रतियोगिता पुरस्कार एवं वर्ष 2016 - कविता के लिए तथा वर्ष 2017 पुन: लघुकथा के लिए शब्द निष्ठा सम्मान। जगमग दीप ज्योति अ.भा. साहित्यकार सम्मान वर्ष 2016 कविता 'धुप के रंग' द्वारा अ.भा.साहित्य सम्मान ''शब्द श्री'' से सम्मानित अ.भा. राष्ट्र समर्पण द्वारा बाल कहानी के लिए पुरस्कृत।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-17-8
मूल्य- 55/-